सत्यमेव जयते

भारत रत्न पुरस्कार - २०२४
Bharat Ratna Award-2024

30 मार्च, 2024
March 30, 2024

सत्यमेव जयते

भारत रत्न पुरस्कार - २०२४
Bharat Ratna Award - 2024

अलंकरण समारोह
Investiture Ceremony

30 मार्च, 2024

March 30, 2024

भारत रत्न
Bharat Ratna

देश का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, **''भारत रत्न''**, मानव प्रयत्न के किसी भी क्षेत्र में की गई सर्वोच्च स्तर की असाधारण सेवाकार्य/निष्पादन के सम्मान के फलस्वरूप प्रदान किया जाता है।

'Bharat Ratna', the highest civilian award of the country, is awarded for exceptional service /performance of the highest order in any field of human endeavour.

भारत रत्न
Bharat Ratna

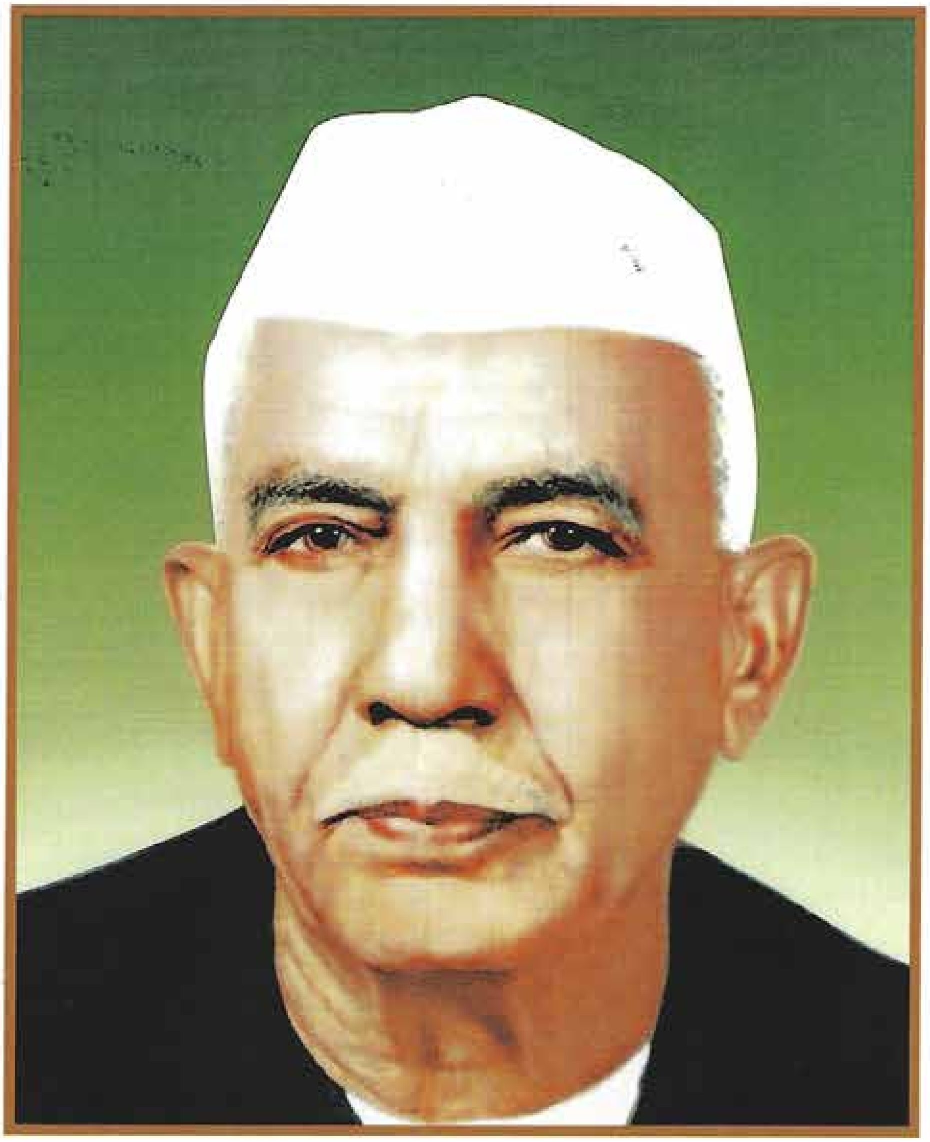

चौधरी चरण सिंह (मरणोपरांत)
Chaudhary Charan Singh (Posthumous)

चौधरी चरण सिंह (मरणोपरांत)

चौधरी चरण सिंह एक बहुआयामी व्यक्तित्व और कट्टर देशभक्त, सुयोग्य प्रशासक, कुशल राजनेता और सबसे बढ़कर, चरित्रवान, निष्ठावान तथा मानवतावादी थे।

2. 23 दिसंबर 1902 को संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) के मेरठ जिले के नूरपुर गांव के एक किसान परिवार में जन्मे चौधरी चरण सिंह की प्राथमिक शिक्षा नजदीकी गांव जानी खुर्द के एक विद्यालय में हुई और उन्होंने मैट्रिक की पढ़ाई मेरठ से की। उन्होंने 1923 में आगरा कॉलेज से विज्ञान में स्नातक और इसके बाद, स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की। उन्होंने 1926 में मेरठ कॉलेज, मेरठ से कानून की डिग्री प्राप्त की।

3. चौधरी चरण सिंह 1929 से 1939 तक गाजियाबाद टाउन कांग्रेस कमेटी के संस्थापक सदस्य थे। वह 1939 में मेरठ चले गए और 1939 से 1946 तक उन्होंने मेरठ जिला कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष, महासचिव और अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वह महात्मा गांधी और महर्षि दयानंद की शिक्षा से बहुत प्रभावित हुए। महात्मा गांधी के आह्वान पर, वह स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गए और तीन बार 1930, 1940 और 1942 में जेल गए।

4. चौधरी चरण सिंह 1937 में पहली बार संयुक्त प्रांत की विधान सभा के लिए मेरठ जिले के गाजियाबाद– बागपत निर्वाचन क्षेत्र से चुने गए। वह 1977 तक विधायक रहे। उन्होंने उत्तर प्रदेश में जमींदारी प्रणाली के उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1951 और 1967 के बीच, एक छोटी अवधि को छोड़कर, उन्होंने महत्वपूर्ण विभागों को संभालते हुए राज्य मंत्रिपरिषद के सदस्य के रूप में कार्य किया।

5. 1967 के आम चुनाव के बाद, चौधरी चरण सिंह ने अपने 16 समर्थकों के साथ कांग्रेस छोड़ दी और जन कांग्रेस नामक एक नए दल की स्थापना की। बाद में पूरा विपक्ष एकजुट होकर संयुक्त विधायक दल (एसवीडी) बना। एसवीडी के नेता के रूप में, चौधरी चरण सिंह को 3 अप्रैल 1967 को उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाया बया। आंतरिक तनाव और कलह के कारण एसवीडी सरकार गिर गई और राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू हो गया। विधानसभा में बाद के घटनाक्रम के दौरान, फरवरी 1970 में वह एक बार फिर मुख्यमंत्री बने।

6. चौधरी चरण सिंह 1977 में पहली बार जनता पार्टी के उम्मीदवार के रूप में लोक सभा के लिए चुने गए और मोरारजी देसाई सरकार में उन्हें गृह मंत्री बनाया गया। उन्होंने श्री राजनारायण को सरकार से हटाने के विरोध में गृह मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। हालांकि, उनके बिना सरकार चलाना मुश्किल हो गया । उन्हें फिर से देसाई सरकार में शामिल कर लिया गया तथा उन्हें वित्त विभाग के साथ उप प्रधान मंत्री बनाया गया।

7. जनता पार्टी में नये घटनाक्रम के फलस्वरूप, श्री मोरारजी देसाई ने 15 जुलाई, 1979 को प्रधान मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। कई दौर के विचार–विमर्श के बाद, तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. नीलम संजीव रेड्डी ने चौधरी चरण सिंह को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया। 28 जुलाई, 1979 को उन्होंने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली।

8. चौधरी चरण सिंह भारतीय अर्थशास्त्र और नियोजन के महान विद्वान थे। उनकी पुस्तकें 'भारत की आर्थिक नीति – गांधीवादी ब्लूप्रिंट' और 'भारत का आर्थिक दुःस्वप्न – कारण और उपाय' भारतीय कृषि विषय पर उत्कृष्ट कृतियां हैं। उनकी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तुकों में 'जमींदारी उन्मूलन', 'कोऑपरेटिव फार्मिंग एक्स–रेड', 'भारत की गरीबी और उसके समाधान', 'उत्तर प्रदेश में कृषि क्रांति' और 'यूपी और कुलकों में भूमि सुधार' शामिल हैं। 1942 में उन्होंने बरेली सेंट्रल जेल में भारतीय शिष्टाचार पर एक अनूठी पुस्तक लिखी। यह पुस्तक बाद में 'शिष्टाचार' शीर्षक से प्रकाशित हुई।

9. चौधरी चरण सिंह का 29 मई 1987 को निधन हो गया। किसान समुदाय की बेहतरी के उनके प्रयासों के कारण नई दिल्ली में उनकी समाधि का नाम 'किसान घाट' रखा गया।

Chaudhary Charan Singh (Posthumous)

Chaudhary Charan Singh was a multi-faceted personality and an ardent patriot, an able administrator, an astute statesman and above all, a man of character, integrity and humanist inclinations.

2. Born on 23 December 1902 in a peasant family at Noorpur Village in Meerut District of United Province (Uttar Pradesh), Chaudhary Charan Singh had his primary education in the nearby village school at Jani Khurd and matriculation from Meerut. He graduated in Science in 1923 and secured his Master's degree from Agra College, Agra. He qualified for law degree in 1926 from Meerut College, Meerut.

3. Chaudhary Charan Singh was a founder member of the Ghaziabad Town Congress Committee from 1929 to 1939. He shifted to Meerut in 1939 and served as Treasurer, General Secretary and President of the Meerut District Congress Committee from 1939 to 1946. He was greatly influenced by the teachings of Mahatma Gandhi and Maharishi Daya Nand. At the call of Mahatma Gandhi, he joined the freedom struggle and was sentenced to jail three times - in 1930, 1940 and 1942 respectively.

4. Chaudhary Charan Singh was elected for the first time to the Legislative Assembly of the United Province from Ghaziabad-Baghpat constituency in Meerut District in 1937. He continued to be a legislator till 1977. He played a pivotal role in the eradication of the Zamindari System in Uttar Pradesh. Between 1951 and 1967, except for a short period, he functioned as a member of the State Council of Ministers holding important portfolios.

5. After the 1967 general elections, Chaudhary Charan Singh accompanied by 16 of his followers, quit the Congress and set up a group called the Jan Congress. Later, the entire opposition came together to form the Samyukta Vidhayak Dal (SVD). As a leader of SVD, Chaudhary Charan Singh was appointed as the Chief Minister of Uttar Pradesh on 3rd April 1967. Inner strains and squabbles led to the downfall of the SVD Government and the State was placed under President's rule. In the course of subsequent turn of events in the Assembly, he once again became the Chief Minister in February 1970.

6. Chaudhary Charan Singh was elected to the Lok Sabha for the first time in 1977 as Janata Party candidate and was appointed as Home Minister in Shri Morarji Desai Government. He resigned from Home Ministership in protest against the removal of Shri Raj Narain from the Government. However, without him, the Government found it difficult to function. He was again inducted into the Desai Government and he was appointed Deputy Prime Minister with Finance as his portfolio.

7. Due to new developments in Janata Party, Shri Morarji Desai resigned from the Prime Minister's post on 15th July, 1979. After a series of consultations, the then President, Dr. Neelam Sanjiva Reddy invited Chaudhary Charan Singh to form the government. He was sworn in as the Prime Minister on 28th July, 1979.

8. Chaudhary Charan Singh was a great scholar of Indian economics and planning. His books 'India's Economic Policy - the Gandhian Blueprint' and 'Economic Nightmare of India - Its Cause and cure' are masterpieces on the Indian agrarian theme. Some of his important publications include : 'Abolition of Zamindari', 'Co-operative Farming X-rayed', 'India's Poverty and its Solutions', 'Agrarian Revolution in Uttar Pradesh' and 'Land Reforms in UP and the Kulaks'. In 1942, he wrote an unique book on Indian etiquette in Barreilly Central Jail. This book was published later with the title 'Shishtachar'.

9. Chaudhary Charan Singh passed away on 29th May 1987. His quest for the betterment of the farming community caused his memorial in New Delhi to be named as 'Kisan Ghat'.

भारत रत्न
Bharat Ratna

Government of India
Ministry of Home Affairs